# सैन्धव मूर्तिकला

सैन्धव सभ्यता के अन्तर्गत मूर्तिकला का सम्यक् विकास हुआ। विभिन्न स्थलों की खुदाई में बहुसंख्यक मूर्तियाँ प्राप्त होती हैं। ये प्रस्तर, धातु तथा मिट्टी तीनों की हैं। प्रस्तर तथा धातु की मूर्तियाँ यद्यपि कम हैं तथापि वे कलात्मक दृष्टि से उच्चकोटि की हैं। इनका विवरण इस प्रकार है—

Scanned with CamScanner

## पाषाण ( प्रस्तर ) मूर्तियाँ

मोहेनजोदड़ो से लगभग एक दर्जन पाषाण मूर्तियाँ तथा हड़प्पा से दो पाषाण मूर्तियाँ प्राप्त होती हैं। हड़प्पा से प्राप्त मूर्तियाँ अपेक्षाकृत अधिक आकर्षक एवं प्रभावशाली हैं। इनका निर्माण सेलखड़ी, अलबेस्टर, चूना-पत्थर, बलुआ-पत्थर, स्लेटी पत्थर आदि की सहायता से किया गया है। प्रस्तर मूर्तियों में सर्वप्रथम मोहनेजोदड़ो से प्राप्त योगी अथवा पुरोहित की मूर्ति का उल्लेख किया जा सकता है। यह सेलखड़ी पत्थर की बनी लगभग 19 सेमी ऊंची है। योगी के मूँछे नहीं है किन्तु दाढ़ी विशेष रूप से संवारी गयी है। इसके केश पीछे की ओर एक फीते से बांधे गये हैं। मस्तक पर गोल अलंकरण है तथा यह बांये कंधे को ढकते हुए तिपतिया छाप वाली शाल ओढ़े हुए है। योगी के नेत्र अधखुले, उसके निचले होठ मोटे हैं तथा उसकी दृष्टि नाक के अग्रभाग पर टिकी हुई है। मस्तक छोटा तथा पीछे की ओर ढलुआ है, गर्दन कुछ अधिक मोटी है तथा मुंह की गोलाई बड़ी है। मैके का विचार है कि कलाकार ने इस मूर्ति के माध्यम से किसी विशिष्ट व्यक्ति का यथार्थ रूपांकन किया है। वे इसे पुजारी की मूर्ति बताते हैं। चन्दा के अनुसार यह 'योगी की मूर्ति' है। इस मूर्ति के केश विन्यास विशेष रूप से आकर्षक है। इस प्रकार की कुछ मूर्तियाँ मिस्र, क्रीट तथा मेसोपोटामिया आदि सभ्यताओं में भी मिलती हैं जहाँ उनका संबंध देवताओं से था। अतः मोहेनजोदड़ो की इस मूर्ति का अवश्य ही कोई धार्मिक महत्व रहा होगा। ऐसा लगता है कि सैन्धव सभ्यता में योग विद्या का जो प्रचार था उसी का प्रतिनिधित्व प्रस्तुत मूर्ति में प्राप्त होता है। बेबीलोन के मन्दिरों में कुछ पुजारी तिपतिया अलंकरण वाले वस्त्र पहनते थे। इस प्रकार का अलंकरण कुछ सैन्धव मनकों पर भी दिखाई देता है। हड़प्पा से प्राप्त एक आभूषण तथा कुछ गुरियों पर भी इसी प्रकार का अलंकरण किया गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि सैन्धव वासियों के जीवन में तिपतिया अलंकरण का कोई विशेष महत्व था। शिल्पकला की दृष्टि से यह मूर्ति सामान्य कोटि की ही है। इसके अतिरिक्त मोहेनजोदड़ो से कुछ अन्य प्रस्तर मूर्तियाँ भी मिलती हैं। एक श्वेत पाषाण का पुरुष मस्तक (लगभग सात इंच ऊँचा) मिला है। यह दाढ़ी युक्त है तथा मूँछे साफ हैं। पीछे की ओर जूड़ा बंधा है, छोटे कटे हुए बाल हैं, कान सीपी जैसे है तथा आंखों में पच्चीदार पुतली है। इसमें पहली मूर्ति जैसी कारीगरी नहीं मिलती है। इसी प्रकार ग्यारह इंच ऊँचा पत्थर की बनी हुई पुरुष मूर्ति का अधोभाग प्राप्त होता है। यह नीचे पारदर्शी वस्त्र पहने हुए है तथा ऊपर बायें कन्धे पर शाल जैसा उत्तरीय ओढ़े हुए है। इसकी पीठ पर गुँथे हुए बालों का जूड़ा है। यह मूर्ति साधारण ढंग से बनाई गयी लगती है। इसके अतिरिक्त मोहेनजोदड़ो से कुछ अन्य पाषाण निर्मित पशु मूतियाँ भी मिलती हैं। इनमें सबसे अधिक उल्लेखनीय श्वेत पाषाण निर्मित लगभग दस इंच ऊँची एक संयुक्त पशुमूर्ति है जिसमें शरीर भेड़ें का तथा मस्तक सूँड़दार हाथी का है। संभवतः इस मूर्ति का कोई धार्मिक महत्व रहा होगा। सैंधव मुहरों पर भी इसी प्रकार की संयुक्त पशु आकृतियाँ उत्कीर्ण मिलती हैं।

हड़प्पा की पाषाण मूर्तियों में दो सिररहित (कबन्ध) मानव-मूतियाँ विशेष

Scanned with CamScanner

रूप से उल्लेखनीय हैं। पहली मूर्ति लाल बलुए पत्थर की तथा दूसरी काले पत्थर की बनी है। दोनों ही मूर्तियों के मस्तक तथा पैर टूटे हुए है। पहली मूर्ति किसी सीधे खड़े हुए पुरुष की है। इसकी गर्दन के ऊपर, कन्धों के निचले भागों तथा जंघों के नीचे छेद बने हुए हैं जो किसी बरमें द्वारा उकेरे हुए लगते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि शरीर के विविध अंगों जैसे मस्तक, हाथ, पैर आदि को अलग-अलग बनाकर किसी मशाले द्वारा जोड़ने की प्रथा उस काल में प्रचलित थी। दुर्भाग्यवश

*पाषाण की नृत्यमुद्रा मूर्ति*

बाद में इस कला का विलोप हो गया। इस नग्न प्रतिमा को कुछ विद्वान् कोई जैन मूर्ति मानते हैं। दूसरी मूर्ति जो स्लेटी पत्थर की है का मुण्ड अलग से बैठाया गया था तथा हाथ-पैर भी एक से अधिक भागों में अलग से जोड़े गये थे। मार्शल, मैके, ह्वीलर आदि विद्वानों ने इसे किसी पुरुष की मूर्ति माना है। मार्शल का तो कहना है कि इस मूर्ति में मूलतः तीन सिर थे जिसके कारण वे इसे शिव के नटराज रूप की आदि प्रतिमा कहते हैं। किन्तु कलाविद् वी० एस० अग्रवाल ने शारीरिक बनावट तथा लक्षणों के आधार पर इसे नारी-मूर्ति माना है। उनके अनुसार 'देह के विभिन्न अंगों का निम्नोन्नत विभाग या उतार-चढ़ाव का बटवारा और भारी नितम्ब भाग सूचित करते हैं कि यह स्त्री की मूर्ति है। इसके कई अंग स्त्री-सौंदर्य की ओर संकेत करते हैं। यह अवश्य मानवीय या दिव्य नर्तकी की मूर्ति थी।[1]

हड़प्पा की इन दोनों ही मूर्तियों के शरीर-सौष्ठव को कलाकार ने अत्यन्त कुशलता के साथ उभारा है। इनका गठन अत्यन्त सजीव एवं प्रभावशाली है जिन्हें देखने से ऐतिहासिक युग की दीदारगंज यक्षिणी जैसी कुछ मूर्तियों का आभास होने लगता है। यूनानी कलाकारों ने गन्धार की बुद्ध मूर्तियों के निर्माण में जो यथार्थता दिखाई है, वही इन मूर्तियों में भी देखी जा सकती है। दोनों के तुलनात्मक अध्ययन के उपरान्त मार्शल ने यह मत व्यक्त किया है कि ईसा पूर्व चतुर्थ शती का कोई भी यूनानी कलाकार ऐसी मूर्तियाँ तैयार करने में गर्व का अनुभव करता। इन मूर्तियों से

1. भारतीय कला, पृष्ठ 26.

Scanned with CamScanner

यह धारणा भी निर्मूल सिद्ध होती है कि केवल यूनानी कलाकार ही मानव-शरीर के यथार्थ चित्रण में निपुण थे। इनसे सूचित होता है कि हड़प्पा के शिल्पी उच्चकोटि की स्वाभाविक प्रतिमाओं का निर्माण कर सकते थे।

हड़प्पा तथा मोहेनजोदड़ो की पाषाण मूर्तियों के तुलनात्मक अध्ययन से स्पष्ट हो जाता है कि हड़प्पा के शिल्पकार यथार्थ रूपांकन मे अधिक दक्ष थे जबकि मोहनजोदड़ो के शिल्पकार शरीर के विविध अंगों का यथार्थ रूप उकेरने मे सफल नहीं हो पाये हैं। हड़प्पा के मूर्तियों की सजीव ढलाई अत्यन्त प्रभावपूर्ण है जिन्हे देखकर यह सहसा आभास हो जाता है कि वहाँ के शिल्पी अत्यन्त उच्चकोटि से स्वभाविक शिल्प गढ़ सकते थे।

## धातु मूर्तियाँ

पाषाण के अतिरिक्त सैंधव कलाकारों ने धातुओं से भी सुन्दर प्रतिमाओं का निर्माण किया। मोहेनजोदड़ो, चन्हुदड़ो, लोथल, कालीबंगन आदि स्थलों से धातु मूर्तियाँ मिली है। धातु निर्मित मूर्तियों में सर्वाधिक उल्लेखनीय मोहेनजोदड़ो से प्राप्त 14 सेमी लम्बी एक नर्तकी की कांस्य मूर्ति है। यह सुन्दर एवं भावयुक्त है। इसके शरीर पर वस्त्र नहीं है तथा पैरों का निचला हिस्सा टूट गया है। बायां हाथ कलाई

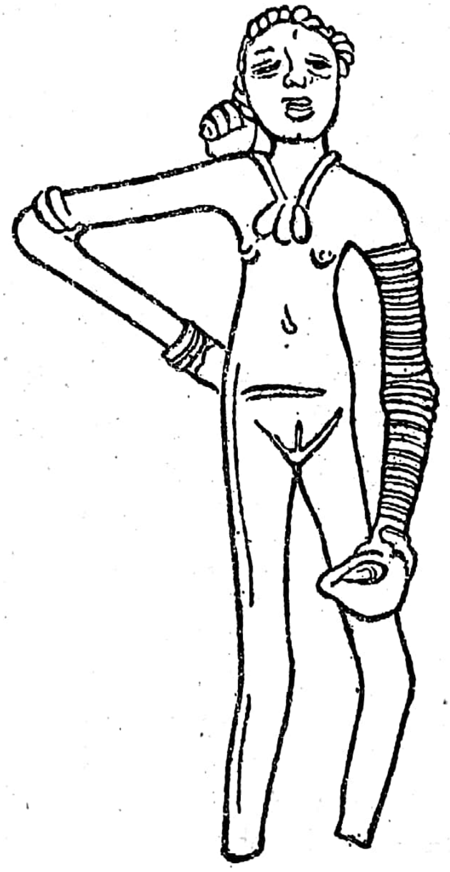

से लेकर कंधे तक चूड़ियों से भरा है तथा नीचे की ओर लटक रहा है। दायें हाथ में वह कंगन तथा केयूर पहने हुए है और वह कमर पर टिका हुआ है। उसके घुँघराले बाल पीछे की ओर जूड़ा में बंधे हुए है, गले में छोटा हार तथा कमर में मेखला है। नर्तकी के पैर जो थोड़ा आगे बढ़े हुए हैं, संगीत की लय के साथ उठते

Scanned with CamScanner

हुए जान पड़ते हैं। अपनी मुद्रा की सरलता एवं स्वभाविकता के कारण यह मूर्ति सबको आश्चर्यचकित करती है।[1] सम्पूर्ण मूर्ति का निर्माण सांचे में ढलाई कर एक ही बार में किया गया है। इसी प्रक्रिया को **मधूच्छिष्ट विधि** कहा जाता है जिससे शताब्दियों पूर्व सैन्धव शिल्पी भलीभाँति परिचित थे। मार्शल के अनुसार इस मूर्ति के माध्यम से कलाकार ने किसी आदिवासी स्त्री का यथार्थ रूपांकन करने का प्रयास किया है। इस नृत्यरत स्त्री की स्वाभाविक मुद्रा के अंकन में उसे अपूर्व सफलता मिली है। पिगट इसकी तुलना कुल्ली से प्राप्त मिट्टी की मूर्तियों से करते हुए इसे बलूची नारी की अनुकृति मानते हैं।

उपरोक्त मूर्ति के अतिरिक्त मोहेनजोदड़ो से ही कांसे की एक अन्य नर्तकी की मूर्ति भी मिली है किन्तु यह कलात्मक दृष्टि से उतनी अच्छी नहीं है। यहीं से ताँबे की दो अन्य मानव मूतियाँ मिलती हैं—पहली कमर पर हाथ रखे हुए तथा दूसरी हाथ ऊपर उठाये हुए है। मानव मूर्तियों के साथ-साथ मोहेनजोदड़ो से भैंसा तथा भेंड़ा की कांस्य-मूर्तियाँ भी मिलती हैं। मोहेनजोदड़ो से ही ताँबे की बनी हुई एक कूबड़दार वृषभ की मूर्ति मिलती है। इसका मुंह नीचे की ओर झुका हुआ है तथा सींग और कानों को किसी फीते से बांधा गया है। इसे एक समूचे धातु खण्ड को काटकर बनाया गया है। यह पशु क्रोधयुक्त आक्रामक मुद्रा में दिखाया गया है। इसके मांसल शरीर, तनी हुई भौंहे, ठूसा मारने की मुद्रा में सींग का चित्रण आदि अत्यन्त स्वाभाविक और कलात्मक हैं। लोथल से कुत्ते तथा कालीबंगन से प्राप्त वृषभ की ताम्र-मूर्तियाँ भी कलात्मक दृष्टि से अच्छी हैं। धातु से बनी इन मूर्तियों में पशुओं की स्वाभाविक विशेषताओं को उभारने में कलाकार को सफलता मिली है। इन धातु-मूर्तियों में ढलाई की जिस विधि का प्रयोग किया गया है उसे हमारे प्राचीन साहित्य में 'मधूच्छिष्ट विधि'[2] (Lost Wax) कहा गया है। इसी से कालान्तर में दक्षिण की नटराज मूर्ति तथा सुल्तानगंज की बुद्ध की ताम्रमूर्ति का निर्माण किया गया।

## *मृणमूर्तियाँ*

सैन्धव मूर्ति—कला के अन्तर्गत लाल रंग की ठोस पकाई हुई मिट्टी की मूर्तियों का भी उल्लेख किया जा सकता है। केवल कुछ को छोड़कर शेष सभी हस्त निर्मित है। ये मनुष्यों तथा पशुओं दोनों की है। मानव मूर्तियाँ अधिकतर स्त्रियों की हैं। मोहनजोदड़ो से जो पुरुष मूर्तियाँ मिली हैं उनमें लम्बी नाक, साफ ठोड़ी, पीछे की ओर ढलुआँ माथा, लम्बी कटावदार आँखें, चिपकाया हुआ मुख आदि मिलता है। कुछ को छोड़कर बाकी सभी नग्न हैं। वत्स ने हड़प्पा से एक ऐसी पुरुष मूर्ति

---

1 This figure, which is cast in one piece, astonishes one by the care and naturalness of its posture. —चारलेटन, वरीड इम्पायर्स, पृष्ठ 154.

2 मधुच्छिष्ट विधि में सर्वप्रथम मोम की मूर्ति बनाई जाती थी। उसके ऊपर चिकनी मिट्टी तथा गोबर का लेप कई बार चढ़ा कर उसे सुखाते थे। सूख जाने के बाद लोहे की तप्त सलाका डालकर मोम-मूर्ति को पिघलाकर निकाल दिया जाता था। इस प्रक्रिया में मूर्ति के आकार का सुराख बन जाता था। तत्पश्चात् उस सुराख में धातु को पिघला कर डाला जाता था। कुछ समय पश्चात् यह ठंडा होकर मूर्ति का आकार ग्रहण कर लेता था। अन्तत: मिट्टी-गोबर का बाहरी ढाँचा फोड़कर अलग कर लिया जाता था तथा धातु की मनोवांच्छित मूर्ति प्राप्त कर ली जाती थी।

Scanned with CamScanner

प्राप्त किया है जो लुंगी पहने हुए है। पुरुष मूर्तियों को श्रृंगयुक्त दिखाया गया है। मोहेनजोदड़ो तथा चन्हूदड़ों से प्राप्त हुछ पुरुष आकृतियों के गले में धागा पड़ा हुआ है जो संभवतः ताबीज धारण करने के लिये था। मोहेनजोदड़ो की एक मूर्ति में साँचे से निकाल कर दो सिर जोड़े गये हैं। दोनों सिरों का मुखभाग एक ही प्रकार का है। अग्रवाल महोदय इसका समीकरण ऋग्वेद में वर्णित '**द्विशीर्ष महादेव**' से करते हैं। यह भी संभावना व्यक्त की गयी है कि शिव के अर्धनारीश्वर स्वरूप को व्यक्त करने का यह कोई आरम्भिक प्रयास रहा हो। मिस्र तथा मेसोपोटामिया की सभ्यताओं में भी दो मुखी देवताओं की मूर्तियां मिलती हैं। किन्तु भारतीय संदर्भ में इस देवता की पहचान असंदिग्ध रूप से नहीं की जा सकती। कुछ पुरुष मूर्तियों के सिर पर सींग की आकृति मिलती है। साँचे में ढले हुए कुछ सींगयुक्त मुखौटे भी मिलते हैं। मैके का अनुमान हैं कि इन मुखौटों का धार्मिक महत्व था। संभवतः अपशकुनी आत्माओं के दुष्प्रभाव से बचने के लिये इन्हें घरों के बाहर दरवाजों पर टांग दिया जाता हो। हड़प्पा से प्राप्त एक पुरुष मृण्मूर्ति को फुल्लों से चिंत्रित वस्त्र पहने हुए दिखाया गया है। लोथल से प्राप्त कुछ मूर्तियों में दाढ़ी दिखाई गयी है। विभिन्न स्थलों से प्राप्त पुरुष मूर्तियों की साधारण गढ़न से सूचित होता है कि निर्माता कलाकार की इनमें कोई खास रुचि नहीं थी।

नारी मूर्तियाँ अपेक्षाकृत सुन्दर तथा प्रभावोत्पादक है। इन्हें गहनों से लादा गया है। इनके मस्तक पर पंखे के समान फैला हुआ आभरण, कानों में गोलाकार कुण्डल, गले कंठा, छाती पर कई लड़ियों वाला हार, कमर में मेखला तथा भुजाओं में भुजबन्द प्रदर्शित किये गये हैं। इनकी कमर में घुटनों तक का लम्बा परिधान है तथा निचला भाग नग्न है। इनकी आँखे, स्तन, आभूषण आदि अलग से चिपकाये गये हैं। नौसारो तथा मेहरगढ़ से कुछ ऐसी नारी मूर्तियाँ मिली हैं जिनकी माँग में लाल रंग भरा गया है। बी० बी० लाल इसे सिन्दूर बताते हैं। स्पष्ट है कि मूर्ति के अलंकरण पर कलाकार ने विशेष ध्यान केन्द्रित किया है। विद्वानों ने इन नारी-मूर्तियों को माता देवी की मूर्तियाँ बताया है जो सैन्धव धर्म की सर्वप्रमुख देवता थी। कुछ मूर्तियों में उनकी गोद में कभी-कभी एक बच्चा भी दिखाया गया है जिससे उनका मातृत्व सूचित होता है। हड़प्पा से मिली एक मूर्ति के योनि से एक पौधा निकलता हुआ दिखाया गया है। यह भी मातृत्व का प्रतीक है। मातादेवी के अतिरिक्त कुछ सामान्य नारी मूर्तियाँ भी मिलती हैं जिन्हें आटा गूँथते अथवा रोटी लिये हुए दिखाया गया है। नारी मूर्तियों की प्रचुरता से स्पष्ट है कि सैंधव लोगों के धार्मिक जीवन में मातृका-पूजन का विशेष महत्व था। कालान्तर में इसी को भारतीय परम्परा में शक्ति, देवी, माताभूमि, ग्राम देवता आदि रूपों में मान्यता दी गयी। सैंधव नारी मूर्तियाँ देवी के कल्याणकारिणी स्वरूप की सूचक है। कुल्ली से प्राप्त कुछ मूर्तियों का मुखमण्डल भयंकर स्वरूप वाला है। इन्हें देवी के रौद्र रूप का द्योतक माना जा सकता है जिसे बाद में चण्डिका, काली, भैरवी आदि नाम से जाना गया। मोहेनजोदड़ो से बालकों की कुछ मृण्मूर्तियां मिली हैं। ये आभूषण पहने हुए हैं तथा इन्हें घुटनों के सहारे चलने की मुद्रा में दिखाया गया है। मैके के अनुसार इनका कोई धार्मिक महत्व रहा होगा।

Scanned with CamScanner

मानव मूर्तियों से कहीं अधिक संख्या में पशुओं की मृण्मूर्तियाँ सैन्धव स्थलों से प्राप्त की गयी हैं तथा वे कला की दृष्टि से अत्यन्त उच्चकोटि की हैं। इसमें कूबड़दार वृषभ विशेष रूप से पाया जाता है। अन्य पशुओं में हाथी, गैंडा, बन्दर, सुअर, बाघ, भालू, खरगोश, भैंसा, भेंड़ा आदि की मृण्मूर्तियाँ काफी संख्या में मिली है। गिलहरी तथा सर्प की मूर्तियाँ भी मिलती है। इनके साथ ही साथ विभिन्न पक्षियों जैसे मोर, कबूतर, तोता, चील, गौरैया, मुर्गा, उलूक आदि की मिट्टी की मूर्तियाँ भी प्राप्त होती है। हड़प्पा से मछली, कछुआ तथा घड़ियाल की मृण्मूर्तियाँ मिलती हैं। एक काल्पनिक पशु की गर्दन से दो सिर निकलते हुए चित्रित किये गये हैं। संभवतः इसका कोई धार्मिक महत्व रहा होगा। लोथल से मिली एक मूर्ति मानव धड़ तथा पशु का सिर है। यहीं से एक गोरिल्ला की मूर्ति मिलती है। हड़प्पा तथा मोहेनजोदड़ो के स्थलों से गाय की मूर्ति तो नहीं मिलती किन्तु राव ने लोथल से गाय की दो मृण्मूर्तियों को प्राप्त करने का दावा किया है। लोथल, सुरकोटदा, कालीबंगन आदि से घोड़े की मृण्मूर्तियां प्राप्त होती हैं। सैन्धव स्थलों से प्राप्त बहुसंख्यक मृण्मूर्तियों में तीन चौथाई पशुओं की हैं। इनमें वृषभ की आकृतियाँ अत्यधिक सुन्दर एवं आकर्षक है। मोहेनजोदड़ो से प्राप्त छोटे सींग वाले वृषभ की आकृति कलात्मक दृष्टि से इतनी उत्कृष्ट है कि मार्शल इसके निर्माता को महान् कलाकार कहते हैं। कालीबंगन से प्राप्त एक वृषभ की सुन्दर आकृति को आक्रामक मुद्रा में प्रदर्शित किया गया है। पक्षियों को बैठे हुए, चोंच खोले हुए एवं उड़ते हुए दिखाया गया है।

सैंधव कुम्हार एक विशेष प्रकार की काचली मिट्टी (Faience) को गूँथ कर मसाला तैयार करते थे जिसकी सहायता से खिलौने, गहने, कड़े-कंगन, ताबीज, बटन, अँगूठी, गोलियाँ, बटखरे आदि बनाये जाते थे। यह काचली मिट्टी क्वार्टज (Quartz) नामक पत्थर के चूर्ण से बनती थी। इसमें काँच का चूर्ण मिलाकर आग में पकाया जाता था जिससे इसका रंग कच्चे शीशे जैसा (काचला) हो जाता था। इस प्रकार की मिट्टी से बनी हुई कुछ विशेष मूर्तियाँ जैसे अनाज के दाने कुतरती हुई गिलहरी, एक दुबका हुआ मेढ़क, तथा लिपटकर बैठे हुए बानर आदि, उल्लेखनीय हैं। काचली मिट्टी की वस्तुऐं मेसोपोटामिया, सीरिया, पश्चिमी एशिया, मिस्र आदि से भी मिलती हैं।

इस विवेचन से स्पष्ट है कि सैंधव मूर्तिकला भारतीय मूर्तिकला के इतिहास में किसी प्रारम्भिक नहीं अपितु विकसित अवस्था को व्यक्त करती है। यहां के विविध स्थलों से प्राप्त छोटी से छोटी कलाकृतियां उच्चकोटि के तकनीक एवं सौन्दर्य भावना को प्रकट करती हैं। मानव रूप की आदर्शपरक अभिव्यक्ति तथा पशुओं का स्वाभाविक निरूपण हम सैन्धव कला में ही प्राप्त करते हैं। तभी तो स्टेला क्रमरिश ने उचित ही समझाया है कि "जिस भारतीय मूर्तिकला ने युगों-युगों में अपनी अक्षुण्ण परम्परा को प्रतिष्ठित किया है उसका स्रोत सिन्धु घाटी की कला से ही प्रवाहित हुआ था।" यही कारण है कि सौन्दर्य एवं तकनीकि दृष्टि से सैन्धव मूर्तिकला को भारतीय मूर्तिकला का शैशव काल कहा जा सकता है।

Scanned with CamScanner